IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय शिक्षा प्रणाली का बदलता स्वरूप: एक आलोचनात्मक अध्ययन

कमल

असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास

एस.डी.(पी.जी.) कॉलेज, पानीपत, हरियाणा

सारांश:

इस शोध पत्र के माध्यम से प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक की शिक्षा में बदलावों को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। जहाँ प्राचीन काल में शिक्षा के माध्यम से मनुष्य अपने जीवन में आर्थिक लक्ष्यों को साथ लेकर लौकिक और आध्यत्मिक लक्ष्यों को भी प्राप्त करना चाहता था वहीँ वर्तमान काल में शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त कर अपनी आजीविका चलाना है, परन्तु इसमें केवल विद्यार्थी का ही दोष नही है अपितु उसके परिवार तथा सरकार का भी दोष है जो उन्हें उन लक्ष्यों के बारे में अवगत न करवाके केवल अर्थ संचित करने पर बल देते हैं। अनेक विदेशी विवरणों से भारतीयों के उच्च नैतिक आदर्शों का पता चलता है परन्तु आज के समय में मनुष्य केवल अपना हित देखता है जिससे उसका नैतिक पतन हो रहा है। चौथी या पांचवी कक्षा के बाद नैतिक शिक्षा जैसा कोई विषय स्कूली पाठ्यक्रम में नहीं दिखता। हाँ, NEP में स्नातक स्तर पर ये विषय जोड़े गए हैं जिसका प्रभाव निश्चित रूप से अगले कुछ वर्षो में दिखाई देगा।

प्राचीन काल में शिक्षा सर्वांगीण विकास पर बल देती थी परन्तु आधुनिक काल में ब्रिटिश सरकार द्वारा अपनाई गयी नीतियों के परिणामस्वरूप वर्तमान भारत में शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करना, पाश्चात्य मानकों पर खरा उतरना इत्यादि रह गया औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाई गयी शिक्षा व्यवस्था को ही हम आजतक किसी न किसी रूप में अपना रहे हैं तथा वंही से हमारी शिक्षा, नैतिक मूल्यों और समाज का पतन शुरू हुआ है।

मुख्य शब्द: शिक्षा, वेद, सर्वांगीण विकास, मदरसा, विद्यालय

साहित्यिक समीक्षा एवं विधि:

इस शोध पत्र में प्राचीन से लेकर आधुनिक काल तक की शिक्षा के विकास का विश्लेषण करते हुए उनके योगदान एवं तत्वमीमांसा की झलक एवं झांकियों को उल्लिखित करने का प्रयास किया गया है। यह लेख मुख्य रूप से द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित होगा। यह देखना दिलचस्प होगा की कैसे तथा किन परिवर्तनों से गुजरते हुए शिक्षा का वर्तमान स्वरूप हमारे सामने आया है।

परिचय:

शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है जो मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक अनवरत रूप से उसके साथ चलती है और उसके फैसलों, गलतियों और उसके आचार व्यवहार में झलकती है। मनुष्य की प्रारंभिक शिक्षा उसके परिवार से शुरू होती है उसके पश्चात मूलभूत बातें सीखकर बालक एक विद्यालय में प्रवेश लेता है और वंहा आगे की पढ़ाई जारी रखता है।

शिक्षा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा की 'शिक्ष' धातु से हुई हैं जिसका सामान्य अर्थ 'सीखना' होता है अर्थात शिक्षा के माध्यम से मनुष्य ज्ञान अर्जित करके एक सभ्य समाज का सभ्य नागरिक बनने का प्रयत्न करता है ।प्राचीन भारतीय शिक्षा तथा साहित्य के क्षेत्र में धार्मिक प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ता है। शिक्षा के प्रारंभिक प्रमाण हमे वैदिक काल से मिलने शुरू होते हैं और इसके बाद से वर्तमान समय तक हमारी शिक्षा प्रणाली निरंतर चली आ रही हैं –

1. वैदिक युग - 1500B.C. – 500B.C.

2. बुद्ध युग - 550B.C. – 450B.C.

3. मुस्लिम युग - 1206A.D. – 1757 A.D.

4. ब्रिटिश युग - 1757A.D. – 1947 A.D.

5. स्वतंत्रता के बाद - 1947A.D. – वर्तमान तक

वैदिक युगीन शिक्षा व्यवस्था

भारतीय जीवन दर्शन के आदिस्त्रोत वेद हैं। भारतीय आर्यो की प्रथम साहित्यिक वाणी ऋग्वेदिक मंत्रो के रूप में हमारे सामने आयी।[1] सामान्यतः "वेद" शब्द का अर्थ होता है "जानो" लेकिन मानव को क्या जानना है क्या नही?- यही मानवीय जीवन की शिक्षा थी। इसी को ग्रहण करने के लिए वेदो में ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास जैसी पद्धतियों का उल्लेख है। सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय शिक्षा गुरुकुलों और आचार्यों क उपदेशों पर आधारित थी। "उपदेश" शब्द का अर्थ है - रहस्यमयी बात की व्याख्या करना। शिक्षा मौखिक ही होती थी, क्योंकि उस समय तक कागज और कलम का आविष्कार नहीं हुआ था, जिसके बाद इसके दो चरण और थे- मनन और निदिध्यासन। उपनिषदों में भी शिक्षा को आत्मसात करने क लिए एक वाक्यांश आया है-

श्रवणं तु गुरोः वाक्यं मननं तदनन्तरं। निदिध्यासन मित्येतत पूर्णबोधस्य लक्षण।[2]

वैदिक शिक्षा की एक प्रमुख विशेषता यह भी है की उसमे शरीर के प्रति विशेष आस्था न होते हुए भी कर्म की उपेक्षा नहीं की

उत्तर वैदिक काल में शिक्षा का उद्देश्य वही बना रहा लेकिन साधन प्रिक्रिया में अन्तर आ गया। पहले जहाँ तप पर बल दिया जाता था वहीँ अब तप का स्थान यज्ञों ने ले लिया। इस काल में भी व्यवहारिक शिक्षा पहले की ही भांति अनवरत रूप से चलती रही। इसके प्रमुख अंगों के रूप में भिक्षाटन, होम की अग्नि प्रज्वल्लित रखना, पशुओं की सेवा करना को उद्धृत किया जा सकता है। समय के साथ वर्ण व्यवस्था मजबूत होती गयी और इसका प्रभाव हमें शिक्षा पर भी देखने को मिलता है जैसे अब से केवल द्विजों को उपनयन संस्कार का अधिकार दिया गया।

बौद्धकालीन शिक्षा व्यवस्था

बौद्ध शिक्षा पद्धति भी अनिवार्यतः ब्राह्मण अथवा हिन्दू शिक्षा पद्धति से पूर्णतः प्रभावित थी। बौद्ध शिक्षा पद्धति क्र प्रमुख शिलाधार वे ही थे, जो की ब्राह्मण शिक्षा पद्धति के थे।[3] इस काल तक आते आते वैदिक शिक्षा व्यवस्था कमजोर पड़ने लगी और अब यज्ञों में भी अनेक कर्मकांड शुरू हो गये। नारी शिक्षा सीमित होने लगी साथ ही साथ अस्पर्शयता भी बढ़ने लगी। इस प्रकार भारतीय पुरातन शिक्षा प्रणाली अपना मूल रूप त्यागने को विवश हुई। यह विवशता मध्य काल में और बढ़ गयी जब मुस्लिमो ने भारत पर आक्रमण किया।

मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था

महमूद ग़जनी के 17 आक्रमणों से शुरू हुआ यह सिलसिला औरंगजेब जैसे कट्टर मुस्लिम शासक के समय समाप्त होता है। मुस्लिम संपर्क के प्रारंभिक युग में, धार्मिक प्रतिक्रिया का प्रवाह स्वभावतः अधिक वेगवान था, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय शिक्षा तथा शिक्षालयों को भरी क्षति हुई।[4] हालांकि मध्यकाल में मुस्लिम आक्रमणकारी हिन्दू शिक्षा को भौतिक हानि के अतिरिक्त किसी प्रकार से प्रभावित न कर सके क्योंकि भारतीय साधु संत जंगलो में रहते हुए गाँवों में इसका प्रचार प्रसार करते रहते थे। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इन आक्रमणकारिओं ने भारत में सामूहिक शिक्षा के केन्द्रो को नष्ट कर दिया था। इस समय क्षेत्रीय भाषाओं का भी काफी विकास देखा गया जिनके उदहारण हैं-

[1]मुनेश्वर प्रसाद "भारतीय शिक्षा का इतिहास", प्रथम भाग, प्राचीन तथा मध्यकाल (श्रीअजन्ता प्रेस लिमिटेड)

[2] डॉ सरयू प्रशाद चौबे "भारतीय शिक्षा का इतिहास",प्राचीन, मध्य और वर्तमान कालीन शिक्षा के विकास और समस्याओं का सरल विवेचन (प्रकाशक- रामनारायण लाल)

[3] मुनेश्वर प्रसाद "भारतीय शिक्षा का इतिहास", प्रथम भाग, प्राचीन तथा मध्यकाल (श्रीअजन्ता प्रेस लिमिटेड)

[4] मुनेश्वर प्रसाद "भारतीय शिक्षा का इतिहास", प्रथम भाग, प्राचीन तथा मध्यकाल (श्रीअजन्ता प्रेस लिमिटेड)

अवधीभाषा में तुलसीदास द्वारा लिखित रामचरितमानस, ब्रज भाषा में सूरदास द्वारा लिखित सूरसागर इत्यादि।

मध्य काल में बिना किसी राजकीय सहायता के भी हिन्दू शिक्षा उच्च स्तरपर रही। दक्षिण भारत में विजयनगर तत्कालीन हिन्दू शिक्षा का केंद्र था। विजयनगर के शासक कृष्ण देव राय ने हिन्दू शिक्षा के प्रसार के लिए अनेक प्रयास किये। इसके अलावा काशी, अयोध्या और मथुरा भी उस समय विद्यार्थी ज्ञानार्जन के लिए जाने जाते थे। मध्यकाल में जितनी प्रसिद्धि कबीर के दोहों को मिली उतनी ही नानक की वाणी को भी सराहना मिली। प्राचीन भारतीय शिक्षा जिन वेदों पर टिकी हुई थी इस काल में उन्ही वेदों पर अनेकों टीकाएं और भाष्य लिखे गए।

आधुनिक कालीन शिक्षा व्यवस्था

मुस्लिम राज भारत में 1707 ईसवी तक माना जाता है लेकिन अंग्रेजो ने प्रत्यक्ष रूप से भारतीय शिक्षा में 1857 के बाद ही अपने हाथ आजमाने शुरू किये। फिर भी इससे पहले भी वे किसी न किसी रूप में भारतीय शिक्षा पर अपनी पकड़ मजबूत करने का प्रयास करते रहे थे उनमे सबसे पहला प्रयास ईसाई मिसनरियों द्वारा किया गया। संत जोवियर भारत आने वाला प्रथम ईसाई धर्म प्रचारक था। इसने गाँवों में जा जाकर ईसाई धर्म की पुस्तकें वितरित की। भारत में कॉलेज खोलने का प्रथम प्रयास भी पुर्तग़ालिओं ने ही किया। सन 1575 में उन्होंने गोवा में एक जेसुएट कॉलेज की स्थापना की। इनके पश्चात् डच, फ्रांसिस और डेन्स ने भी अपने स्तर पर काफी प्रयास किये परन्तु भारतीय शिक्षा पर सबसे अधिक प्रभाव ईस्ट इंडिया कंपनी का पड़ा। कंपनी ने सर्वप्रथम मद्रास में विद्यालयों का निर्माण करवाया, इसके अलावा जंहा जंहा कंपनी के लोग बसने लगे उन् जगहों पर भी विद्यालयों का प्रसार होने लग। इन् विद्यालयों के पाठ्यक्रम में ईसाई धर्म अनिवार्य विषय रखा गया था इसके अल्वा गणित, तमिल, हिंदी, और अंग्रेजी आदि विषय भी थे। वारेन हेस्टिंग्स ने कलकत्ता मदरसा की स्थापना 1781 में की। इस मदरसे में कुरान के धर्म सिद्धांत कानून तर्कशास्त्र, गणित, ज्योतिष, व्याकरण और दर्शन शास्त्र की शिक्षा दी जाती थी।

1791 में बनारस संस्कृत कॉलेज की स्थापना जोनाथन डंकन ने की। इसमें हिन्दू रीति-नीतियों पर बल दिया जाता था। अब तक कंपनी ने शिक्षा का भार भारतीयों पर ही डाल रखा था तथा स्वयं केवल आब्जर्वर की तरह कार्य कररही थी लेकिन 1813 के आज्ञा पात्र के माध्यम से ईसाई मिसनरियों को स्पष्ट रूप में भारत में आकर ईसाई धर्म और ईसाई शिक्षा के प्रचार करने की छूट मिल गयी।

1835 में लार्ड मैकाले ने मैकाले मिनट्स के तहत इंग्लिश को सम्पूर्ण भारत पर लागू कर दिया। लार्ड मैकॉले ने 1836 में अपने पिता को लिखे एक पत्र में कहा था की "कोई भी हिंदू जिसने अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की है, वह कभी भी अपने धर्म से सच्चे दिल से जुड़ा नहीं रहता।"[5]

इसके पश्चात आधुनिक काल में भारतीय शिक्षा से संबंद्धित प्रथम एक्ट 1854 का वुड्स डिस्पैच आया था जिसे "भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा " के नाम से जाना जाता है, , इसमें आशा व्यक्त की गयी कि "सभी ईसाई धर्म, हिंदू, मोहम्मदन या किसी भी धार्मिक प्रवृत्ति द्वारा संचालित संस्थान विश्वविद्यालयों से संबद्ध हो सकते हैं, यदि उन्हें आवश्यक अध्ययन पाठ्यक्रम प्रदान करने के लिए पाया जाता है, और उन पर आवश्यक आचरण प्रमाणपत्रों के लिए भरोसा किया जा सकता है।"[6]

इसके बाद 1882 का हंटर आयोग आया जिसमे प्राथमिक शिक्षा को जिला बोर्डो और स्थानीय प्रशाशन के अधीन करने और उच्च शिक्षा पर सरकारी नियंत्रण कम करने के सुझाव दिए गए

1902 के रैले आयोग ने बढ़ती राजनीतिक चेतना व राष्ट्रवादी भावना को कम करने के लिए सरकारी नियंत्रण बढ़ाने पर बल दिया तथा इस आयोग ने कहा गया कि किसी भी विश्वविद्यालय में पारम्परिक धर्म को अध्यनन का विषय नहीं माना जाना चाहिए[7]

1919 के मोंटेगीयू चैम्सफोर्ड एक्ट के तहत प्रांतो में शिक्षा विभाग लोगों द्वारा निर्वाचित मंत्री के अधीन कर दिया गया

[5] KULDIP KAUR "EDUCATION IN INDIA (1781-1985)", CHAPTER XV RELIGIOUS, MORAL AND SPIRITUAL EDUCATION (Centre for Research in Rural & Industrial Development)

[6] KULDIP KAUR "EDUCATION IN INDIA (1781-1985)", CHAPTER XV RELIGIOUS, MORAL AND SPIRITUAL EDUCATION (Centre for Research in Rural & Industrial Development)

[7] KULDIP KAUR "EDUCATION IN INDIA (1781-1985)", CHAPTER XV RELIGIOUS, MORAL AND SPIRITUAL EDUCATION (Centre for Research in Rural & Industrial Development)

इसी कड़ी में आगे हर्टोग समिति (1929), वर्धा योजना (1937),सार्जेंट योजना (1944) ने भारतीय शिक्षा को बेहतर करने में अपना योगदान दिया

स्वतंत्रता के बाद शिक्षा व्यवस्था:

स्वतंत्रता के उपरान्त इस दिशा में प्रथम प्रयास राधाकृष्णन आयोग के रूप में किया गया जिसने अपनी रिपोर्ट अगस्त 1949 में प्रस्तुत की:

- 12 वर्ष तक स्कूली शिक्षा
- शिक्षा के उद्देश्य -सामान्य शिक्षा , संस्कारी शिक्षा , व्यावसायिक शिक्षा
- शिक्षा को समवर्ती सूची में रखा गया
- UGC की स्थापना

कोठारी शिक्षा आयोग (1964-66) ने शिक्षा में नैतिक शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को बढ़ाने पर बल देने की बात कही इसके साथ साथ राष्ट्रिय बजट का 6% शिक्षा पर व्यय करने की सिफारिश की।

1967 के संसद सदस्यों की समिति, जिसे भारत सरकार ने शिक्षा आयोग 1964-66 की रिपोर्ट पर विचार करने के लिए नियुक्त किया था, ने देखा कि यह सच था कि केवल शिक्षा उचित नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों को बढ़ावा नहीं दे सकती, जो समाज के कई संस्थानों और अंगों द्वारा उत्पन्न होते हैं। हालाँकि, इसे युवाओं के दृष्टिकोण और मूल्यों के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देना चाहिए।[8]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मुनेश्वर प्रसाद "भारतीय शिक्षा का इतिहास", प्रथम भाग, प्राचीन तथा मध्यकाल (श्रीअजन्ता प्रेस लिमिटेड)

2. प्यारेलाल रावत "प्राचीन व आधुनिक भारतीय शिक्षा का इतिहास" (भारत पब्लिकेशन्स, आगरा)

3 Suresh Chandra Ghosh "The History of Education in Modern India (1757-2012), fourth edition (Orient Blackswan Private Limited)

4. KULDIP KAUR "EDUCATION IN INDIA (1781-1985)" (Centre for Research in Rural & Industrial Development)

5. मुनेश्वर प्रसाद, "भारतीय शिक्षा का इतिहास", प्रथम भाग, प्राचीन तथा मध्यकाल (श्रीअजन्ता प्रेस लिमिटेड)

6. मुनेश्वर प्रसाद, "भारतीय शिक्षा का इतिहास", द्वितीय भाग, आधुनिक काल (श्रीअजन्ता प्रेस लिमिटेड)

7. The Wonder That Was India by A.L. Basham

[8] KULDIP KAUR "EDUCATION IN INDIA (1781-1985)", CHAPTER XV RELIGIOUS, MORAL AND SPIRITUAL EDUCATION (Centre for Research in Rural & Industrial Development)